lxfBr {k= d tkrk m|kx e dk;jr Jfedk dh ifLFkfr ,o xfr'khyrk dk ,d lekt'kkL=h; v/;;u ¼vkxjk uxj d fo'k"k lnHk e½

n;kyckx f'k{k.k lLFkku n;ky ckx] vkxjk

dh

ih-,p-Mh- ¼lekt'kkL=½ dh mikf/k grq iLrkfor :ij[kk

2018

lk;ko{kd

प्रो. बंदना गौड़

विभाग—समाजशास्त्र एवं राजनीति विज्ञान

समाज विज्ञान संकाय

'kks/kkfFkZuh

अनुपम

ldk; ie[k

प्रो. कमलजीत सन्धू

विभाग—मनोविज्ञान

समाज विज्ञान संकाय

foHkkxk/;{k

प्रो. पूर्णिमा जैन

समाज विज्ञान संकाय

n;kyckx f'k{k.k lLFkku n;kyckx]

n;kyckx] vkxjk&282005

i:Lrkouk %&

कामगार वर्ग या (श्रमिक वर्ग) एक ऐसा वर्ग है। जो निम्नस्तरीय कार्यो और निम्न आय मापदण्ड पर लगे होते है। श्रमिक वर्ग मुख्यतः औद्यौगीकृत अर्थव्यवस्थाओं और गैर औद्योगीकृत अर्थव्यवस्था वाले शहरी क्षेत्रों में पाये जाते है। श्रमिक हमारे समाज का वह वर्ग है जिस पर समस्त आर्थिक उन्नति टिकी हुई है। वह मानवीय श्रम का सबसे आदर्श उदाहरण है। आज भी मशीनी युग में इस वर्ग की महत्वता कम नही हुई है। उद्योग, व्यापार, कृर्षि निर्माण, पुल निर्माण आदि के समस्त क्रिया कलापों में श्रमिकों का योगदान महत्वपूर्ण है। मजदूर अपना श्रम बेचता है बदले में वह न्यूनतम मजदूरी प्राप्त करता है। उसका जीवन यापन दैनिक मजदूरी के आधार पर होता है। जब तक वह कार्य कर पाने में सक्षम होता है। तब तक उसका गुजारा होता रहता है। जिस दिन अशक्त होकर काम छोड़ देता है। उसी दिन से वह दूसरों पर निर्भर हो जाता है। भारत में असंगठित क्षेत्र के मजदूरों की स्थिति यही है। असंगठित क्षेत्र के मजदूरों की न केवल मजदूरी कम होती है। अपितु उन्हें किसी भी प्रकार की सामाजिक सुरक्षा प्राप्त नही होती है।

संगठित क्षेत्र के मजदूरों की स्थिति कुछ अच्छी है उन्हें मासिक वेतन मँहगाई भत्ता, पेंशन एवं अन्य सुविधायें प्राप्त होती है। मृत्यु के दौरान उन्हे विभाग की और सुरक्षा प्रदान की जाती है। ताकि उनका परिवार बेसहारा न हो।

egkRek xk/kh d: vu|lkj &

''प्रत्येक व्यक्ति को इतनी मजदूरी मिलनी चाहिये कि वह अपनी आवश्यकतायें पूरी करने में समर्थ हो। जीवन की बुनियादी जरूरत की वस्तुयें सभी को उसकी प्रकार सुलभ होनी चाहिये जिस प्रकार हवा और पानी सबके लिये सुलभ है।''

Jherh bfnjk xk/kh d: vu|lkj &

''सक्रिय और सशक्त मजदूर संघ आंदोलन लोकतान्त्रिक समाज का एक आवश्यक अंग है। लोकतन्त्र में व्यक्ति के अधिकारों और समाज के प्रति उत्तरदायित्व का बहुत सुंदर संतुलन होता है।''

dkfyUl dkfcYM bfXy'k yXoxt fMD'kujh d vuqlkj&

"श्रमिक वह व्यक्ति हैं, जो ऐसा कार्य करता है जिसमें कठोर शारीरिक श्रम तथा कार्य निहित होताहै। विभिन्न प्रकार के छोटे बड़े उद्योगों में श्रमिकों की भूमिका अपरिहार्य होती है। सामान को एक स्थान से दूसरे स्थान पर पहुँचाना निर्माण कार्यों में योगदान देना, खेतों में बुबाई, निराई, कटाई का काम करना, सभी कल कारखानों व फैक्ट्रियों के निर्माण कार्य से लेकर उत्पादन व वितरण के कार्य में श्रम करना। आज भारत में अनेक उद्योग धंधे हैं जिनमें हजारों श्रमिक कार्यरत हैं।"

भारत में जूता उद्योग का महत्वपूर्ण स्थान है। भारत द्वारा बनाये गये जूते की माँग विदेशों में भी है। जूता उघोग भारत में संगठित तथा असंगठित रूप से भारत में फैला हुआ है। उत्तर प्रदेश के आगरा नगर की जूता उघोग के क्षेत्र में विशिष्ट पहचान है।

vkxjk e: trk m|kx dk bfrgkl

आगरा में जूता उत्पादन का इतिहास पुराना है। जूता उत्पादन का प्रारम्भ सर्वप्रथम सबसे पहले आगरा से हुआ। अकबर द्वारा इस कला और संस्कृति को बढावा दिया गया। चमड़ा निर्माताओं ने शिल्पियों को जूता बनाने के निर्देश दिये। जिससे हमारे पैरों की सुरक्षा हो सके। आगरा में जूता उत्पादन सर्व प्रथम हींग की मण्डी से प्रारम्भ हुआ। आगरा द्वारा बनाये गये जूते ''मेम्मतन इन्स्टीट्यूट ऑफ इग्लैण्ड'' द्वारा पास किये गये।

आगरा में जूता उघोग मुगल काल से है। मुगल बादशाह कारखानों में विशेष रूचि रखते थे। अकबर अपने कारखानों एवं उनमें विभिन्न देशों के कारीगरों को भर्ती करनेएवं स्थानीय लोगों को कला में प्रशिक्षित करने में रूचि लेता था। मुगल शासन के दौरान जूता उत्पादन आगरा में विशेष रूप से हुआ। जूता की डिजायन बेल्वेट कागज तथा सिल्क के कपडे पर कलाकृति किये जाते थे। इस काल में जूता कारखानों की भूमिका न केवल घरेलू अपितु साम्राज्य के सैन्य एवं वित्तीय क्षेत्र में भी महत्वपूर्ण भूमिका थी। ये राज्य की औघोगिक प्रगति को भी प्रभावित करते थे।

प्रारम्भिक ब्रिटिश काल में अंग्रेज जब भारत आये तो इन्होंने व्यापार करना आरम्भ किया। इसी काल में अंग्रेजो ने चमड़ा उत्पादन को भी आगे बढ़ाया। आगरा तथा दिल्ली में इन्होंने जूता उघोग स्थापित किये यही से फुटवियर की माँग बढ़ती गई। अंग्रेज अपने अनुसार जूतों को डिजायन करवाते थे। परिणामस्वरूप फैशन के तौर पर लोग ऐसी ही डियाजन के जूतों को पसंद करने लगे। इस प्रकार से जूतों की माँग बढ़ती गई परिणाम स्वरूप जूता उघोगों में भी विकास हुआ।

LorU=rk d: Ik'pkr tirk m?kkx %&

प्रारम्भिक ब्रिटिश काल मुसलमान जूता उघोग को बढ़े स्तर पर चलाते थे। इस काल में हानि होने के कारण कुछ जूता उघोग बंद हो गये लेकिन सरकार द्वारा जूता उघोग में सुधार हेतु नीतियाँ बनाई गई।

जूता उघोग में सुधार हेतु सरकार द्वारा बहुत सी संस्थायें बनाई गई जो कि इन उघोगों को आर्थिक और तकनीकि सुविधायें प्राप्त करा सके। कुछ महत्वपूर्ण संस्थायें निम्नलिखित है।

lsUVªy QqVfo;j Vsfuax baLVhVîV ¼lh-Vh-,Q-vkbZ½

यह संस्था आगरा के सिकन्दरा औघोगिक क्षेत्र में स्थापित है। यह संस्था आगरा के छोटे छोटे जूता उघोगो को देखती है तथा उन्हें आर्थिक सहायता प्रदान करवाती है। यह संस्था उघोगों के प्रशिक्षित कर्मचारी प्रदान करवाती है। 1 जनवरी सन् 1996 में इस संस्था की स्थापना हुई।लेम्कों की स्थापना आगरा के जूता उघोगों को सहायता प्रदान करवाने के लिये की गई। यहाँ नई तकनीकि अनुसार नये जूते बनाये जाते है। यह संस्था जूता उत्पादन से सम्बन्धित प्रशिक्षण करवाती है। जिससे कुशल कारीगर जूता उघोग में जाये।

एन.एल.आई आगरा नगर के नुनिहाई क्षेत्र में स्थापित है। यह संस्था चमड़ा उत्पादन के लिये नये–नये दिशा निर्देश देती है। यहाँ विशेषज्ञों द्वारा अनेक प्रशिक्षण कार्यक्रम चलाये जा रहे है। यहाँ संस्था जूता उत्पादन के विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभा रही है।

- भारतीय संविधान में श्रमिकों की सहूलियत के लिये कुछ ऐसे प्रावधान रखे गये है। जिनका लाभ उन्हें मिला है श्रमिकों से लिये जाने वाले काम को निर्धारित कर दिये गये। उसके अतिरिक्त श्रम लेने पर अतिरिक्त भुगतान करना पढ़ता है। श्रम संगठनों को अपने हित के लिये आंदोलन चलाने का अधिकार दिया गया है। इन सब के बाबजूद भी श्रमिकों के कल्याण दिशा में अभी बहुत कुछ करने की आवश्यकता है उन्हें पेंशन तथा सुरक्षा देने की आवश्यकता है। मजदूरों के श्रम का सम्मान होना चाहिए।
- भारतीय संविधान में 'श्रम' समवर्ती सूची का विषय है। अतः इस पर केन्द्र व राज्य सरकारों दोनों ही कानून बना सकती है। पिछले सात दशकों में केन्द्र व राज्य सरकारों ने श्रमिकों की सामाजिक सुरक्षा और कल्याण के लिये कई महत्वपूर्ण कदम उठाये है।
- मातृत्व लाभ के अंतर्गत वैतनिक अवकाश 12 सप्ताह कर दिया गया है।
- श्रमवे जयते कार्यक्रम में एकीकृत पोर्टल 'श्रम सुविधा' पोर्टल प्रारम्भ किया है।

Je lEcU/kh vf/kfu;e

- मजदूरी संदाय अधिनियम, 1936
- न्यूनतम मजदूरी अधिनियम, 1948
- बोनस संदाय अधिनियम, 1965
- समान पारिश्रमिक अधिनियम, 1976
- ठेका श्रम (विनिमय एवं उन्मूलन) अधिनियम, 1970
- बालश्रम (निरोध एवं विनियमन) अधिनियम, 1986
- औधोगिक रोजगार (स्थाई आदेश) अधिनियम, 1946
- प्रसूति लाभ अधिनियम, 1961

- औद्योगिक विवाद अधिनियम, 1947
- अन्तर्राज्यीय प्रवासी श्रमिक (रोजगार और सेवा शर्त विनियमन) अधिनियम, 1979
- श्रम कानून (कतिपय प्रतिष्ठानों द्वारा रजिस्टरों को रखने और प्रस्तुत करने की छूट) अधिनियम, 1996
- श्रेलवे कर्मचारी (कार्य के घंटे और विश्राम की अवधि) नियमावली 2005

l)kfUrd ifjis{;

आर्थिक तथा दार्शनिक विचारों के इतिहास में कार्ल मार्क्स महान विचारक हैं जिन्हें साम्यवाद के जनक के रूप में देखा जाता है उन्होंने सम्पूर्ण विश्व के लिये एक ऐसी क्रांति दी कि उन्हें अंतर्राष्ट्री सर्वहारा वर्ग के महान शिक्षक और नेता के रूप में देखा जाने लगा। मार्क्स ने ऐतिहासिक भौतिकवाद की व्याख्या वर्ग संघर्ष के आधार पर की है। कम्यूनिष्ठ घोषणा में मार्क्स ने कहाहै कि समाज के अस्तित्व के साथ ही वर्ग संघर्ष का जन्म हुआ मनुष्य एक सामाजिक प्राणीहै। इसे हम 'वर्ग प्राणी' भी कह सकते हैं। प्रत्येक युग में मानव ने अपनी जीविकोपार्जन के लिये भिन्न–भिन्न साधनों का उपयोग किया। इस कारण मनुष्य अलग अलग वर्गों में बट गये और प्रत्येक वर्ग की एक अलग चेतना बनी। अतः वर्ग का जन्म उत्पादन के तरीकों में परिवर्तित होताहै। नवीनवर्गों का उद्‌भव होने लगता है। इस प्रकार उत्पादन प्रणाली जो उस समय प्रचलित होती है उन वर्गों की प्रकृति को निश्चित करती है। मार्क्स के अनुसार वर्ग विभाजन धनी औरनिर्धन, शोषक और शोषित तथा शासक और शाषित वर्गों में होता है। मार्क्स के आर्थिक वर्ग है जो उत्पादन की प्रक्रिया के आधार पर बनते हैं। प्रमुख रूप से समाज में दो वर्ग पाये जाते हैं। जिनका निर्माण आर्थिक या भौतिक आधार पर होता है। यह उत्पादन की प्रक्रिया द्वारा होता है। एक वर्ग उत्पादन के साधनों पर अधिकार रखता है वह आर्थिक दृष्टि से शोषण कर्ता तथा राजनैतिक दृष्टि से शासित होता है। दूसरा वर्ग वह होता है जो उत्पादन का कार्य करता है। अपनी शक्ति लगाकर वस्तुओं का उत्पादन कर वह आर्थिक दृष्टि से गरीब, सामाजिक दृष्टि से शोषित तथा राजनैतिक दृष्टि से शासित होता है।

पूंजीवादी युग पूंजीपति तथा श्रमिकों का वर्ग है। पूंजीपति के पास उत्पादन के साधन होते हैं और श्रमिकों के पास केवल श्रम। इस श्रम को श्रमिक पूंजीपतियों के हाथों कम मूल्य में बेच देता है। इस क्रिया में पूंजीपति श्रमिक का शोषण करता है। श्रमिक पूजीपतियों के शोषण विधियों और अत्याचार के कारण नमक–रोटी सुख से नहीं खाता है। पूंजीपति उस नमक रोटी को भी छीनने की चेष्टा करता है जिसके कारण श्रमिक संघर्ष करता है।

दुर्खीम ने अपनी पुस्तक 'द डिवीजन ऑफ लेवर इन सोसायटी' में व्यक्ति और सामूहिकता के बीच सम्बन्धों पर विचार किया है उन्होंने इस समस्या पर विचार किया कि व्यक्तियों का एक समूह समाज का निर्माण किस प्रकार कर सकता है और सामाजिक अस्तित्व के लिये किस तरह लोग सामान्यतः सहमत होकर सामाजिक एकता बनाये रखते हैं।

दुर्खीम श्रम–विभाजन को दो भागों में बॉटते हैं– सामान्य श्रम विभाजन और असामान्य श्रम विभाजन। जो श्रम विभाजन सामाजिक एकता को आगे बढ़ाते हैं। उनको सामान्य श्रम विभाजन कहते हैं। जो सामाजिक विभाजन को कमजोर करते हैं, उन्हें असामान्य श्रम विभाजन कहते हैं। उन्होंने असामान्य श्रम विभाजन को पुनः दो भागों में बाँटा है। अप्रतिमानित श्रम विभाजन और व्यवस्था मूलक। जब विभाजन को बिल्कुल अलग से लागू किया जाये तो जिससे मजदूर उत्पादन की प्रक्रिया से बिल्कुल अलग हो जाये और कर्मचारी तथा नियोक्ता के बीच स्थायी तौर पर बिलगाव उत्पन्न हो जाये तो इस प्रकार के श्रम विभाजन को दुर्खीम अप्रतिमानित श्रम विभाजन कहते हैं। श्रम विभाजन के फलस्वरूप समाज विभिन्न भागों में विभाजित हो जाता है। परन्तु आवश्यकताओं के आधार पर एक दूसरे से सम्बन्धित व निर्भर हो जाता है और यह अन्तर सम्बन्ध एवं अंतःनिर्भरता श्रम विभाजन के साथ–साथ बढ़ती चली जाती है।

leL;k dFku %&

प्रस्तुत शोध कार्य में "संगठित क्षेत्र के जूता उद्योग में कार्यरत श्रमिकों का अध्ययन किया जायेगा।" प्रारम्भिक औघोगिक समाज में स्त्री तथा पुरूषों को समान रूप से उघोग में कार्य करने की स्वतन्त्रता प्राप्त थी। समयानुसार परिस्थितियों में परिवर्तन के परिणामस्वरूप स्त्री तथा पुरूष के कार्य के प्रति भेदभाव किया

जाने लगा। भारत द्वारा बनाये गये जूते की माँग विदेशों मे भी है। जूता उघोग भारत में संगठित तथा असंगठित रूप से भारत में फैला हुआ। उत्तर प्रदेश के आगरा नगर में जूता उघोग विस्तृत रूप से फैला हुआ है। जिसमें अनेक श्रमिक कार्य करते है। यहाँ श्रमिकों की स्थिति संतोषजनक नही है। उन्हें उचित सुविधायें नही मिलती जैसे कार्य करने के लिये उचित वातावरण का अभाव, उनके स्वास्थ्य पर नकारात्मक प्रभाव पड़ता है। जिससे उनकों कार्य के प्रति असंतोष देखा जाता है। उघोग के मालिक भी श्रमिकों के साथ अच्छा विवादस्पद स्थिति उत्पन्न करते थे। आगरा नगर के जूता उघोग में बहुत सी महिला श्रमिक भी कार्य करती है। श्रम विभाजन के तहत महिला कारीगारों को निम्न की दृष्टि से देखा जाता है। उनके लिये सामाजिक सुरक्षा को कोई प्रावधान नही है। महिला श्रमिक की समस्यायें पुरूष श्रमिकों से अलग होती है। संगठित क्षेत्र में महिला कामगारों की स्थिति करे तो यहाँ पर सामाजिक सुरक्षा के कुछ कानून तो बने हुये, लेकिन कानून को लागू करने की मशीनरी प्रक्रिया कुछ ऐसी है कि महिलाओं को हक और न्याय नही मिल पाता। हिंसा और यौन शोषण के मामले में इसलिये न्याय नही मिल पाता। उपरोक्त समस्याओं को देखते हुये शोधार्थिनी द्वारा इस विषय का चुनाव किया जाएगा।

v/; ;u dk egRo %&

किसी भी देश की अर्थव्यवस्था वहाँ के श्रमिकों पर टिकी हुई है। श्रमिक अपने श्रम को बेचकर राष्ट्र की प्रगति में योगदान देता है। श्रमिक हमारे समाज का वह वर्ग है, जिस पर समस्त आर्थिक प्रगति टिकी हुई है। यह मानवीय श्रम का सबसे आदर्श उदाहरण है। यह सभी प्रकार के क्रिया कलापों की धुरी है। आज भी मशीनी युग में उसकी महत्वता कम नही हुई है। मजदूर वर्ग वह वर्ग है जो अपने कठोर परिश्रम से समाज की सहायता करता है, जूता उघोग में महिला तथा पुरूष श्रमिक काम करते है।

उघोगों में श्रमिकों की कई प्रकार की शारीरिक मानसिक क्षमताओं का उपयोग होता है। पुरूष स्त्री की अपेक्षा अधिक भारी कार्य करने में सक्षम होते है। श्रमिक पूर्ण रूप से अपनी शारीरिक और मानसिक क्षमता का योगदान देते है। उघोग में कार्यरत प्रबन्धकों तथा श्रमिकों के बीच सम्बन्ध नकारात्मक तथा सकारात्मक परिस्थितियों के बीच श्रमिक समायोजन करते है। कार्य प्रकृति में विविधता के परिणामस्वरूप

कार्य के घंटे में विविधता पाई जाती है। दोनों के बीच समायोजन स्थापित करना श्रमिकों को मूल उद्देश्य होता है। जूता उघोग में कार्यरत श्रमिक अनेको चुनौतियों का सामना करते हुये अपने कार्य को समुचित रूप से करते है। उघोगों में कार्यरत श्रमिकों के लिये सरकार द्वारा अनेक कानूनी प्रावधान बनाये गये है। जिसमें श्रमिकों को उचित कल्याण हेतु समय समय संशोधन का प्रावधान रखा गया है।

lkfgR; dk iqukoyksdu

- lDlsuk ¼1962½ ने कारखानों की प्राशासनिक व्यवस्था के बारे में बताया है। इन्होंने बताया है कि अगर श्रमिकों की सुविधाओं का उचित ध्यान नहीं दिया जायेगा तो हमारे कारखाने सुचारू रूप से नहीं चलेगें तो इससे हमारेदेश की अर्थव्यवस्था पर काफी गहरा प्रभाव पढ़ेगा। हमारेदेश की पूंजी प्रभावित होगी। इन्होंने यह भी बताया है कि श्रमिकों को किन समस्याओं का सामना करना पड़ता है।
- JhokLro ¼1969½ ने कारखाना अधिनियम एक्ट 1891 के बारे में बताया है। यह एक्ट 50 अथवा अधिक श्रमिक शक्ति का प्रयोग करने बाले कारखानों पर लागू होता है। सभी फैक्ट्री एरूट अधिनियमों के बारे में बताया है तथा सामूहिक सौदबाजी की धीमी प्रगति के कारण बताये हैं तथा सामूहिक सौदबाजी की सफलता के सुझाव दिये हैं।
- fxjh ¼1972½ ने व्याख्या की है कि श्रमिकों की समस्या हमारे समाज की गम्भीर समस्या होती है। इनकी समस्या दिन प्रतिदिन बढ़ती जा रही है आज के आधुनिक युग में मशीनीकरण के परिणाम स्वरूप अनेक श्रमिक बेरोजगार होते जा रहे हैं। पहले जब मशीनें नहीं होती थीं तो श्रमिकों की माँग बढ़ती थी उन्हें रोजगार आसानी से मिल जाता था।
- flag ¼1973½ ने स्पष्ट किया है कि भारत में औद्योगिक विकास ब्रिटिश शासन के दौरान हुआ। इसी समय में भारत के बने माल का आयात निर्यात दूसरे देशों में हुआ तथा इन्होंने समान मजदूरी अधिनियम तथा श्रमिकों के समक्ष आने वाली समस्सयाओं तथा उनको प्रभावित करने वाले कारकों का वर्णन किया है।

- i lkn ¼1986½ ने विश्लेषित किया है कि चमड़े का कार्य अनुसूचितजाति के जाटवों का प्रमुखकार्य है। इन्होंने बताया है कि पहले लोग पारम्परिक तरीके से चमड़े का उत्पादन करते थे। आधुनिकीकरण के परिणाम स्वरूप नई तकनीकियों द्वारा चमड़े का उत्पादन होता है तथा चमड़े के पुराने शिल्पियों और आज के नये चमड़ा कलाकारों के मध्य सम्बन्ध को बताया है तथा अनुसूचित जाति के श्रमिकों की समस्याओं पर भी प्रकाश डाला है।
- ?kkS"k ¼1988½ ने विवेचित कियाहै कि किस प्रकारसे ट्रेड यूनियन श्रमिकों को सुरक्षा प्रदानकरवाती है इन्होंने बताया है कि किस प्रकारसे उद्योग प्रबन्धकों द्वारा श्रमिकों का शोषण कियाजाता है। ट्रेड यूनियन उनके हितों की सुरक्षा कैसे करती है। ट्रेड यूनियन के कार्यों की विस्तृत रूप से विवेचना की है।
- oekZ ¼1989½ ने स्पष्ट कियाहै कि आमतोर पर श्रम सम्बन्धों की भयावहता औद्योगिक गतिविधियों पर प्रभाव डालते हैं। श्रमिकों से अगर ज्यादा काम लिया जाताहैतो श्रम से उनका अलगाव उत्पन्न हो जाता है। उन्हें उनके श्रम की उचित मजदूरी दी जानी चाहिये।
- dqekj ¼1991½ ने शिल्पियों और उन श्रमिकों के बारे में चर्चा की है जो जूता उद्य़ोग में कार्य करते हैं तथा जाटवों की सामाजिक आर्थिक स्थिति के बारे में भी बताया है। औद्योगिकरण के परिणामस्वरूप सामाजिक परिवर्तन आया है। जिससे अनुसूचित जाति के लोगों की स्थिति में सुधार आया है। औद्योगीकरण के परिणामस्वरूप अर्थव्यवस्था विकसित हुई सम्पूर्ण विश्व एक वैश्विक बाजार बन गया है। भारत में जूता उद्योग बढ़ रहे हैं, जिससे अनुसूचित जाति के श्रमिकों की स्थिति अच्छी हो रही है।
- dkSyjk ¼1994½ ने बताया है कि रबर और फुटवियर उद्योग भारतीय अर्थव्यस्था में अपना प्रमुख योगदानदेते हैं। वह बताती है कि उत्तर पूर्वी राज्यों में रबर और फुटवियर उद्योग बहुत कम है। उन्होंने प्राकृतिक रूप से रबर उत्पादन के बारे में बताया है। उन्होंने अंत में कहा है कि इन उद्योगों की सहायता के लिये सरकार को मुख्य रूप से आगे आना चाहिये।

- dqekj fot; ¼1996½ ने स्पष्ट किया है कि हमारे देश में चमड़ा उद्योग काफी पुराने समय से चलता चला आ रहा है। चमड़ा उद्योग अत्यन्तआवश्यक है। क्योंकि जिंदा रहने के लिये हमारे शरीर को जिस तरह से भोजन की आवश्यकता है। उसी प्रकार से हमारे पैरों में पहनने के लिये जूते की आवश्यकता है।
- 'k"kkfxjh ¼1996½ ने अपने लेख में महिला श्रमिकों की सामाजिक तथा आर्थिक स्थिति को बताया है तथा उनके प्रवास कारक बताये हैं। उन्होंने यह बताने का प्रयास किया है कि किस परिस्थिति वश महिलायें जूता उद्योगों में कार्य करती हैं तथा उनको मिलने वाले श्रम के बारे में चर्चा की है।
- ikVuh ¼1998½ ने उद्योग तथा औद्योगिक विकास के बारे में बताया है तथा प्रबन्धक तथा श्रमिकों के मध्य सम्बन्धों को बताया है। ट्रेड यूनियन का कारखानों में क्या महत्व होता है। इन्होंने औद्योगिक इकाईयों परिमाण तथा औद्योगिक इकाईयों के अनुकूलतम आकार को प्रभावित तथा निश्चित करने बाले कारकों के बारे में बताया है।
- txu ukFk vkj uk;M ¼1998½ ने अपने लेख में मार्केटिंग ऑफ लेदर प्रोडक्ट्स में अनेक प्रकार की जूते की विश्वस्तरीय ब्रान्ड के बारे में बताया है। जैसे नायक, रीबुक इत्यादि ब्रान्ड के स्रोत भारत से ही दूसरे देशों में जाते हैं। चमड़ा हमारेदेश से दूसरे देशों में आयात निर्यात होता है।
- nkeknju ¼1999½ नेबताया है कि भारत विश्व का दूसरा निर्मित करनेवालादेश है फिलहाल भारत द्वारा निर्मित जूता अनेक देशों में अपनीपहचान बना रहा है। भारत द्वारा अनेक देशों में जूते का आयात निर्यात होता है। इससे हमारेदेश की अर्थव्यवस्था सुदृढ़ होती जा रही है।
- uk;M ¼2000½ नेअपने लेख में वर्णित किया है कि चमड़ा उद्योग हमारेदेश की अर्थव्यवस्था में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। भारत विश्वका चौथा चमड़ा निर्यात करने वाला देश है। प्रतिशत चमड़ा आयात निर्यात हमारेदेश से दूसरे देशों में होता है। इस उद्योग से विशेषतः पिछड़े वर्ग के लोगों को

फायदा है। इन्होंने निष्कर्ष स्वरूप बताया है कि भारतीय जूता उद्योग को दूसरे देशों से प्रतिस्पर्धा का सामना करना पढ़ता है।

- xx! ¼2001½ ने अपनी पुस्तक लेवर लॉ में श्रम सम्बन्ध अधिनियमों की विस्तृत व्याख्या की है तथा बताया है कि श्रम सम्बन्धी अधिनियम बन तो गये हैं लेकिन उनका उपयोग सुचारू रूप से नहीं हो रहा है। श्रमिकों का अनेक तरह से शोषण होता है। उन्हें उनके श्रम के अनुसार मजदूरी नहीं दी जाती है। श्रमिक किसी भी उद्योग के लिये प्रभाव कारी कारक होता है और श्रम सम्बन्धी विधान विभिन्न प्रकार के उद्योग धन्धों के लिये बने हैं।
- ckyकृ".ku ¼2002½ ने बताया है कि महिलायें आधी आबादी का हिस्सा होती हैं। महिला श्रमिक अपने जीवन में अनेक समस्याओं का सामना करती हैं। जैसे कि उनको उचित मजदूरी न मिलना, असुरक्षा की भावना चिकित्सीय सुविधाओं का अभाव, किसी भी दुर्घटना का शिकार होने पर उन्हें मुआवजा न दिया जाना इत्यादि प्रकार की समस्याओं का सामना करना पढ़ता है। महिला सशक्तिकरण के द्वारा ही इनकी स्थिति में सुधार आयेगा।
- i!I kn ¼2007½ ने विवेचित किया है कि विकासशील देशों में गरीबी एक आम बात है। आर्थिक विकास की निम्न दर से सामाजिक जीवन स्तर एवं आर्थिक दशा बदतर होती हैं भारत एक विकासशील देश है। कृषि यहाँ की महत्वपूर्ण विशेषता है। जनाधिक्य भी यहाँ बहुत है। परिवार में बेरोजगार तथा आश्रितों का होना यहाँ की परम्परा हैं ऐसी स्थिति में गरीब परिवार के लोग अपने जीविकोपार्जन हेतु मजदूरी के लिये विवश होते हैं। इन श्रमिकों से बेगार लिया जाता है तथा इन्हें कार्य के बदले कम मजदूरी दी जाती है। इन्हें अनेक प्रकार से प्रताड़ित किया जाता है।
- nk/khp ¼2014½ ने महात्मा गाँधी के विचारों को बताया है उन्होंने आर्थिक क्षेत्र में पूंजीबाद तथा सामयवाद दोनों व्यवस्थाओं को नकारा है वे मानते थे कि पूंजीबाद दोनों व्यवस्थाओं को नकारा है वे मानते थे कि पूंजीवाद मनुष्य की भौतिक सुख सुविधाओं को बढ़ाने की व्यवस्था है, जिसमें खुली प्रतिस्पर्धा है बड़े बड़े उद्योगों द्वारा बाजारों को नियन्त्रित किया जा रहा है, जिससे गरीब तथा अमीर

के बीच खाई बढ़ती जा रही है। दूसरी ओर साम्यवादी व्यवस्था में राज्य का नियन्त्रण आर्थिक शक्तियों पर होने से व्यक्तियों को निरूत्साहित करते हैं। गाँधी जी ने इन दोनों विकल्पों में से गाँधी जी ने एक ग्राम आधारित अर्थव्यवस्था की परिकल्पना की, जिसमें पूंजीपति और श्रमिक के मध्य बिना किसी हिंसा के आधार पर सम्बन्ध हो। सम्पत्ति और धन का सही प्रकार से उपयोग हो सके।

- feJk ¼2014½ ने श्रमिकों की समस्यायें, श्रमिक असंतोष के कारण, श्रम कानून, श्रमिक असंतोष को दूर करने के उपाय बताये हैं। उन्होंने बताया है कि श्रमिक अपने जीवन में किन किन परिस्थितियों से गुजरता है तथा फिर भी अपने परिवार का पालन पोषण करता है। वह हर परिस्थिति में अपना कार्य करता है।

- i`jh ,oa feJk ¼2015½ ने स्पष्ट किया है कि भारतीय औद्योगिक नीतियों के परिणामस्वरूप भारतीय अर्थव्यवस्था में किस प्रकार परिवर्तन आया है? तथा भारत के प्रमुख बड़े उद्योग, लोहा इस्पात उद्योग, चीनी तथा जूट उद्योग के बारे में बताया है तथा छोटे छोटे कुटीर तथा लघु उद्योगों के बारे में भी चर्चा की है।

- ykjsUl ¼2016½ ने महिला श्रमिकों की स्थिति की विस्तृत रूप से व्याख्या की है। महिला श्रमिकों से किस प्रकार लिंग के आधार पर भेदभाव किया जाता है। महिला श्रमिकों के काम करने के पीछे अनेक सामाजिक आर्थिक कारक उत्तरदाई होते हैं। ये अनेक कष्टों को झेलते हुये अपने परिवार की सुख समृद्धि के लिये अपना श्रम बेचती हैं। उन्हें कोई सुविधायें प्राप्त नहीं, रोजगार की सुरक्षा नहीं और उन्हें न्यूनतम वेतन अधिनियम के तहत ठहराया वेतन भी नहीं दिया जाता है और हर तरह से शोषण किया जाता है।

'kks/k iz'u

- आगरा नगर के संगठित क्षेत्र के जूता उघोग में कार्यरत श्रमिकों की सामाजिक आर्थिक प्रस्थिति कैसी है?

- संगठित क्षेत्र के जूता उघोग में कार्यरत श्रमिकों की कार्य प्रकृति तथा गतिशीलता किस प्रकार की होती है?
- जूता उघोग में कार्यरत श्रमिकों से लिंग के आधार पर किस प्रकार का भेदभाव किया जाता है?
- संगठित क्षेत्र के जूता उद्योग में कार्यरत जूता उघोग में कार्यरत प्रबन्धकों तथा श्रमिकों के बीच सम्बन्ध कैसे होते है?
- आगरा नगर के संगठित क्षेत्र के जूता उघोग में कार्यरत श्रमिकों को किस प्रकार की चुनौतियों का सामना करना पड़ता है?
- जूता उघोग में कार्यरत श्रमिकों के कल्याण हेतु कौन कौन से कानूनी प्रावधान बनाये गये है?

v/;;u dk mn~ns'; %&

- आगरा नगर के संगठित क्षेत्र के जूता उघोग में कार्यरत श्रमिकों की सामाजिक और आर्थिक प्रस्थिति का अध्ययन ।
- संगठित क्षेत्र के जूता उघोग में कार्यरत श्रमिकों की कार्य प्रकृति तथा गतिशीलता का अध्ययन।
- जूता उघोग में कार्यरत श्रमिकों में लिंग के आधार पर भेदभाव का अध्ययन।
- संगठित क्षेत्र के जूता उद्योग में कार्यरत प्रबंधकों तथा श्रमिकों के बीच सम्बन्धों का अध्ययन।
- आगरा नगर के संगठित क्षेत्र के जूता उद्योग में कार्यरत श्रमिकों की चुनौतियों का अध्ययन।
- जूता उद्योग में कार्यरत श्रमिकों के कल्याण हेतु सरकार द्वारा बनाये गये कानूनी प्राबधानों का अध्ययन।

'kks/k izjpuk %&

प्रस्तावित शोध कार्य हेतु वर्णनात्मक, विश्लेषणात्मक एवं व्याख्यात्मक शोध का प्रयोग किया जायेगा।

v/; ;u {k=%&

प्रस्तावित अध्ययन आगरा नगर के "संगठित क्षेत्र केजूता उद्योग में कार्यरत श्रमिकों की प्रस्थिति एवं गतिशीलता का समाजशास्त्रीय अध्ययन" (आगरा नगर के विशेष संदर्भ में) का शोधकार्य हेतु आगरा नगर सिकन्दरा औघोगिक क्षेत्र तथा हलबाई की बगीची क्षेत्र में स्थापित 3 जूता उघोगों को चुना जायेगा।

v/; ;u dh bdkbZ %&

अध्ययन की इकाई के रूप में जूता उघोग में कार्यरत स्त्री पुरूष श्रमिकों का अध्ययन किया जायेगा।

v/; ;u dk lexz %&

प्रस्तावित शोध कार्य हेतु आगरा नगर के पंजीकृत जूता उघोगों का अध्ययन किया जायेगा।

fun'ku %&

प्रस्तावित शोध कार्य हेतु आगरा नगर के 3 जूता उघोगों का अध्ययन किया जायेगा जिसमें दैव निदर्शन की लौटरी पद्धति 340 श्रमिकों का चुनाव किया जायेगा।

Ø-l-	Tkwrk dkj[kkuk	Lkexz		mRrjnkrkvksa dh la[;k	
		Ikq:"k	Ekfgyk	Ikq:"k	Ekfgyk
1	डाबर कारखाना	676	253	81	30
2	लाम्बा कारखाना	878	444	105	53
3	मेट्रो एण्ड मेट्रो कारखाना	381	205	46	25
	कुल	1935	902	232	108

Resource -पंजीकृत कारखाना (डाबर, लाम्बा, मेट्रो एण्ड मैट्रो)

v/; ;u ds L=ksr %&

प्रस्तुत अध्ययन के स्त्रोत के रूप में प्राथमिक व द्वितीयक स्त्रोतों का चयन किया जायेगा। प्राथमिक स्त्रोत के अंतर्गत साक्षात्कार अनुसूची, असहभागी अवलोकन का प्रयोग किया जायेगा। द्वितीयक स्त्रोतों के रूप में पुस्तकों, पत्रिकाओं व इंटरनेट व अन्य माध्यमों का प्रयोग किया जायेगा।

rF;ksa dk fo'ys"k.k ,oa lkj.kh;u %&

तथ्यों को अधिक स्पष्ट करने हेतु प्राप्त तथ्यों का सांख्यिकीय विश्लेषण एवं सारणीयन किया जायेगा।

rF;ksa dk fp=e; izn'kZu %&

तथ्यों का विश्लेषण एवं सारणीयन के पश्चात तथ्यों का विभिन्न प्रकार के चित्रों, ग्राफ, पाई चित्र आदि के अध्ययन से चित्रमय प्रदर्शन किया जायेगा।

iLrkfor v/;;u

iFke v/;k;

- प्रस्तावना
- समस्या कथन
- अध्ययन का महत्व
- साहित्य का पुर्नावलोकन
- शोध प्रश्न
- अध्ययन के उद्देश्य
- अध्ययन का क्षेत्र एवं समग्र
- अध्ययन की इकाई
- निदर्शन
- तथ्य संकलन
- तथ्यों का वर्गीकरण, विश्लेषण एवं सारणीयन
- तथ्यों का चित्रमय प्रदर्शन

f}rh; v/;k;

- आगरा नगर के संगठित क्षेत्र के जूता उघोग में कार्यरत श्रमिकों की सामाजिक और आर्थिक प्रस्थिति का अध्ययन।

r`rh; v/;k;

- संगठित क्षेत्र के जूता उघोग में कार्यरत श्रमिकों की कार्य प्रकृति तथा गतिशीलता का अध्ययन।

prqFkZ v/;k;

- जूता उघोग में कार्यरत श्रमिकों में लिंग के आधार पर भेदभाव का अध्ययन।

ipev/;k;

- संगठित क्षेत्र के जूता उद्योग में कार्यरत प्रबंधकों तथा श्रमिकों के बीच सम्बन्धों का अध्ययन।

"k"B v/;k;

- आगरा नगर के संगठित क्षेत्र के जूता उद्योग में कार्यरत श्रमिकों की चुनौतियों का अध्ययन।

lIre v/;k;

- जूता उघोग में श्रमिकों के कल्याण हेतु सरकार द्वारा चलाये गये कानूनी प्रावधानों का अध्ययन।
- निष्कर्ष
- संदर्भ ग्रन्थ

ifjf'k"V

- साक्षात्कार अनूसूची
- जनसंख्या से सम्बन्धित सारणी

lnHk xUFk lph

- सिंह वी.बी., (1963),"भारत में औद्योगिक श्रम" एशियन पब्लिशिंग हाउस, मुम्बई।
- श्रीवास्तव डा. राजमणि लाल, (1969),"भारत तथा विदेशों में श्रम विभाजन" प्रकाश प्रकाशन मन्दिर, जयपुर।
- वेद, के.एन. (1970), "भारत में श्रमिक कल्याण", श्रीराम सेन्टर पब्लिकेशन्स, नई दिल्ली।
- वी.वी. गिरी, (1972),"भारतीय उद्योगों में श्रमिकों की समस्यायें", एशिया पब्लिशिंग हाऊस, मुम्बई।
- आशारानी, (1983),"भारतीय नारी श्रम औरदिशाएं", नेशनल पब्लिशिंग हाउस, नई दिल्ली।
- त्यागी, बी.पी. (1994),"आर्थिक श्रम और समाज कल्याण", नाथपब्लिकेशन्स, जयपुर।
- पाटनीआर.एल., (1998),"भारतीय औद्योगिक अर्थशास्त्र", रस्तोगी पब्लिकेशन्स, जयपुर।

- गर्ग अजय, (2001),"श्रमिक विधान", नवी पब्लिकेशन्स, नई दिल्ली
- गोयल, डॉ. सुनील एवं गोयल संगीता (2002), "महान सामजाशास्त्रीय विचारक" आर.बी.एस. पब्लिशर्स जयपुर।
- द्विवेदी राकेश, (2005),"महिला सशक्तिकरण चुनौतियाँ व रणनीतियाँ", पूर्वशा प्रकाशन, भोपाल।
- प्रसाद डा. गोविन्द, (2007),"महिला एवं बाल श्रमिक", डिस्कवरी पब्लिशिंग हाउस, नई दिल्ली।
- बघेल डॉ. बी.ए.स, (2012),"औद्योगिक समाजशास्त्र", विवेक प्रकाशन, दिल्ली।
- मिश्रा डॉ. महेन्द्र कुमार, (2014), "सामाजिक समस्यायें और उनके समाधान" न्यू कान्सैप्ट्स पब्लिशर्स, दिल्ली।
- दाधीच नरेश, (2014), "महात्मा गाँधी का चिंतन", रावत पब्लिकेशन्स, जयपुर।
- पुरी वी.के. एवं एस.के. मिश्र, (2015),"भारतीय अर्थव्यवस्था", हिमालया पब्लिशिंग हाउस, मुम्बई
- लॉरेन्स डा. नास्मिन, (2016),"महिला श्रमिक : सामाजिक स्थिति एवं समस्यायें", अर्जुन पब्लिशिंग हाउस, नई दिल्ली।
- Dharendof, Ralf(1959).'Class andcloss confliet inIndustrial society'. California : standford University Press.
- Browne R.C. (1961). Health in industries in India.Delhi :Atma Ram Publications.
- V.V. Giri. (1972). 'Labour problem in Indian industry. New York : Asia publishing house.
- Saxena R.C.(1981). Labour problems and social welfare.Meerut: Nath publications.

- Bhatnagar Deepak. (1984). Labour welfare and social security Legalisations. New Delhi : Deep and Deep publications.
- Sharma, A.M. (1989). Industrial Relations : Conceptual and Legal Framework. Mumbai : Himalya Publishing house.
- Reddy, R. Ram. (1990). Industrial Relation in India. New Delhi : Mittal Publications.
- Srivastava, T.N. (1985). Women and the Law. New Delhi : Intellectual Publications.
- Gani Abdul, (1991). Labour Maragement Relations. New Delhi : Concept Publicationas.
- Awasthappa, K. (1991). Principles of Business Law. Munbai : Himalaya Publishing House.
- Khan Habiba. (1996). An In-Depth study of footwear industry withspecial imposes an merman an united state Market, project Report, Aligarh Muslim University.
- Bhogaliwal T.N. (2000) Economics aofLabour and Industrieal Relations : Agra : Sahitya Bhawan
- Garg Ajay. (2001). Labour Laws: New Delhi Babhi Publications.

- Jugale, V.B. (2008). An Agenda Economics Reforms for the state in India. New Delhi: Serials Publications.
- Chauhan, M.S. (2011)[Labour Economics : Issues and policy. Delhi : Global Pubnlication.
- Padhi, P.K. (2015). Labour Industrial Issues. New Delhi : PH1 Learning Private Limited.
- www.latherindia.org.
- centreal footwear training institute Agra
- www.indianshoebazar.com